nbt.india
एक: सूते सकलम्

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

नवंबर 2014 वर्ष 19, अंक 11

'साक्षर भारत मिशन' के तहत उर्दू में भी मिलेंगी किताबें

सरकार द्वारा अब साक्षर भारत योजना के अंतर्गत निरक्षर मुसलमानों को लोक-शिक्षा केंद्रों व जन शिक्षण संस्थानों की देखरेख में मदरसों में पढ़ाया जाएगा। किताबें भी उर्दू भाषा में ही उपलब्ध करवाई जाएँगी। अभी तक सिर्फ हिंदी में ही पुस्तकें मिला करती थीं। इसका लाभ उत्तर प्रदेश के उन जिलों को होगा, जहाँ 2001 की जनगणना में 20 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी रहती है। सरकार ने साक्षर भारत योजना के अधीन ही मौलाना आज़ाद तालिम-ए-बालिगान योजना को संचालित करने का निर्णय लिया है। साक्षरता निदेशक ने सभी जिलों को दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं।

साक्षर भारत मिशन के जरिये 15 साल से अधिक उम्र के निरक्षरों को साक्षर बनाने का अभियान चल रहा है। इसके लिए गाँव-गाँव लोक शिक्षा केंद्र खोले गए हैं। अक्षर ज्ञान से जुड़ी किताबें भी सरकार ही दे रही है। अभी तक ये हिंदी में ही होती थीं। अब यहाँ उर्दू प्रवेशिका 'इब्तदा' उपलब्ध कराई जाएगी। जहाँ लोक शिक्षा केंद्र नहीं हैं, वहाँ जन शिक्षण संस्थान के जरिये निरक्षर मुसलमानों को अक्षर ज्ञान दिया जाएगा।

साक्षरता निदेशक, वैकल्पिक शिक्षा, उर्दू एवं प्राच्य भाषाएँ, अमर नाथ वर्मा ने लोक शिक्षा समितियों को इसकी सूचना भेजी है। उर्दू की किताबों की आपूर्ति मैसर्स पीतांबरा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, बिजौली (झाँसी) करेगी। लोक शिक्षा केंद्रों के गाँवों तक सीमित होने के कारण शहरों में मदरसों के जरिये उर्दू का ज्ञान दिया जाएगा। इसके लिए कुछ मदरसे चुने जाएँगे। अलीगढ़ में 16 जुलाई को केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की टीम जौहराबाद के एक मदरसे का निरीक्षण भी कर चुकी है। साक्षर भारत मिशन की पूर्णकालिक अधिकारी, नीलम शर्मा का कहना है कि साक्षरता बढ़ाने के लिए सरकार तेजी से प्रयास कर रही है। अब 'साक्षर भारत मिशन' के तहत उर्दू की किताबें भी मिलेंगी। शहरों में मदरसों के जरिये योजना का संचालन किया जाएगा।

आओ सुनाएँ तुम्हें मलाला की कहानी...

महिलाओं के लिए अनिवार्य शिक्षा की माँग करते हुए तालिबानी गोली का शिकार हुई पाकिस्तान की 17 वर्षीय सामाजिक कार्यकर्ता मलाला यूसुफजई को 2014 का नोबेल शांति पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। मलाला को पाकिस्तान में महिलाओं के लिए शिक्षा को अनिवार्य बनाए जाने की माँग के बाद तालिबान की गोली का शिकार होना पड़ा था। 10 दिसंबर को उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

कौन हैं मलाला यूसुफजई?

मलाला का जन्म 1997 में पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत के स्वात जिले में हुआ। मलाला के पिता का नाम जियाउद्दीन यूसुफजई है। तालिबान ने 2007 से मई 2009 तक स्वात घाटी पर कब्जा कर रखा था। इसी बीच तालिबान के भय से लड़कियों ने स्कूल जाना बंद कर दिया था। मलाला तब आठवीं की छात्रा थीं। उनका संघर्ष यहीं से शुरू होता है।

2008 में तालिबान ने स्वात घाटी पर अपना नियंत्रण कर लिया। साल के अंत तक वहाँ करीब 400 स्कूल बंद हो गए। इसके बाद मलाला के पिता उसे पेशावर ले गए, जहाँ उन्होंने नेशनल प्रेस के सामने वो मशहूर भाषण दिया जिसका शीर्षक था—हाउ डेयर द तालिबान टेक अवे माई बेसिक राइट टू एजुकेशन? तब वो केवल 11 साल की थीं।

साल 2009 में उसने अपने छद्म नाम 'गुल मकई' से बीबीसी के लिए एक डायरी लिखी। इसमें उसने स्वात में तालिबान के कुकृत्यों का वर्णन किया था। बीबीसी के लिए डायरी लिखते हुए मलाला पहली बार दुनिया की नजर में तब आई जब दिसंबर 2009 में जियाउद्दीन ने अपनी बेटी की पहचान सार्वजनिक की।

मलाला पर तालिबानी हमला

2012 में तालिबानी आतंकी उस बस पर सवार हो गए जिसमें मलाला अपने साथियों के साथ स्कूल जाती थी। उनमें से एक ने बस में पूछा, "मलाला कौन है?" सभी खामोश रहे, लेकिन उनकी निगाह मलाला की ओर घूम गईं। इससे आतंकियों को पता चल गया कि मलाला कौन है। उन्होंने मलाला पर एक गोली चलाई जो उसके सिर में जा लगी। मलाला पर यह हमला 9 अक्तूबर, 2012 को खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत की स्वात घाटी में किया गया था। गंभीर रूप से घायल मलाला को इलाज के लिए ब्रिटेन ले जाया गया। यहाँ उसे क्वीन एलिजाबेथ अस्पताल में भर्ती कराया गया। देश-विदेश में मलाला के स्वस्थ होने की प्रार्थना की गई और आखिरकार मलाला वहाँ से स्वस्थ होकर लौटी।

कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती थी

मलाला पर तालिबानी हमले के बाद उनके स्कूल के एक टीचर ने बातचीत के दौरान बताया, "मलाला जब ढाई साल की थी तभी से अपने पिता के स्कूल में अपने से 10 साल बड़े बच्चों के साथ बैठा करती थी। वो बोलती कुछ नहीं थी, बस टुकुर-टुकुर सब कुछ निहारा करती। स्वात घाटी में अपने स्कूली जीवन के दौरान मलाला हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती थी। वह एक विलक्षण प्रतिभा की धनी साधारण-सी दिखने वाली लड़की थी जिसे कभी इस बात का अनुमान नहीं था कि वो इतनी खास बन जाएगी।"

कई पुरस्कारों से सम्मानित की गई मलाला

जब वह स्वस्थ हुई तो अंतरराष्ट्रीय बाल शांति पुरस्कार, पाकिस्तान का राष्ट्रीय युवा शांति पुरस्कार (2011) के अलावा कई बड़े सम्मान मलाला के नाम दर्ज होने लगे। 2012 में सबसे अधिक प्रख्यात शख्सियतों में पाकिस्तान की इस बहादुर बाला मलाला यूसुफजई का नाम रहा। लड़कियों की शिक्षा के अधिकार की लड़ाई लड़ने वाली साहसी मलाला यूसुफजई की बहादुरी के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा मलाला के 16वें जन्मदिन पर 12 जुलाई को मलाला दिवस घोषित किया गया। उन्हें सखारोव मानवाधिकार पुरस्कार भी दिया गया।

रायपुर में कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत एवं राज्य संसाधन केंद्र, रायपुर, छत्तीसगढ़ के तत्वावधान में नवसाक्षरों के लिए बेहतर पठन सामग्री तैयार करने हेतु एक तीन दिवसीय कार्यशाला का 16 से 18 सितंबर, 2014 तक आयोजन किया गया। शहर से लगभग पचास किलोमीटर दूर चंपारण में आयोजित इस कार्यशाला में राज्य के तकरीबन बीस रचनाकारों ने हिस्सेदारी की।

कार्यशाला का उद्घाटन वरिष्ठ पत्रकार व प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ललित सुरजन ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में सहायक संपादक (हिंदी) व छत्तीसगढ़ राज्य के समन्वयक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने की।

कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर आमंत्रित थे, दिल्ली से कथाकार डॉ. अमरेंद्र मिश्र व छत्तीसगढ़ से श्री सतीश जायसवाल। इस अवसर पर राज्य संसाधन केंद्र के निदेशक श्री तुहिन देव एवं राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण के सहायक संचालक प्रशांत पांडेय और दिनेश टांक भी मौजूद थे।

मुख्य अतिथि ललित सुरजन ने कहा–''आप सब रचनात्मक लेखन से जुड़े हुए हैं, परंतु नवसाक्षरों के लिए लिखना आसान नहीं है।'' उन्होंने विश्व साहित्य की चर्चा करते हुए कहा, ''जिस तरह बड़ों के लिए साहित्य की रचना की जाती है उसी तरह नवसाक्षरों के लिए भी रचा जाता है। हम प्रौढ़ों के लिए साहित्य की रचना करने जा रहे हैं। हमें उनकी जीवन शैली तथा सामाजिक सरोकारों से भली-भाँति परिचित होना है, हमें उनके मनोविज्ञान को समझना होगा; उनके लिए रोचक विषयों पर आधारित किताबों को तैयार करना होगा, यह चुनौती है हमारे सामने जिस पर रचनाकारों को विजय हासिल करनी है।'' डॉ. ललित मंडोरा ने कहा–''न्यास विगत अनेक वर्षों से कार्यशाला करता आया है जिसके बेहतर परिणाम मिले हैं। रचनाकारों को पता चलता है कि लिखना इतना आसान नहीं जितना आसान मान लिया गया है, बल्कि तैयार की गई रचनाओं के असली पाठक हमारे नवसाक्षर हैं जो क्षेत्र-परीक्षण के समय पांडुलिपि की गुणवत्ता पर अपने विचार देते हैं।''

संदर्भ व्यक्ति श्री सतीश जायसवाल ने कहा–''हम साक्षर लोगों की जिम्मेवारी बनती है कि समाज में फैले निरक्षर लोगों को साक्षर बनाएँ।'' उन्होंने साथ-साथ नवसाक्षरों के बीच वाचनालय एवं पुस्तक वाचन की संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने की बात पर भी जोर दिया। वहीं, दूसरी ओर दिल्ली से गए कहानीकार डॉ. अमरेंद्र मिश्र ने कहा–''रचनाओं में ऊर्जा होनी चाहिए जो आकर्षित कर सके।

अच्छे लेखन के साहित्य का ज्यादा-से-ज्यादा अध्ययन भी जरूरी है। सभी रचनाकारों को अपने रचे हुए का मूल्यांकन भी स्वयं करना होगा और इस मामले में कठोर बनना भी उतना ही जरूरी है।'' राज्य साक्षरता मिशन की ओर से आर्थिक साक्षरता, विधिक साक्षरता, आपदा प्रबंधन, चुनावी साक्षरता आदि विषयों पर ध्यान दिलाया गया।

कार्यशाला का पहला दिन रोचक रहा। सब रचनाकारों से निर्धारित विषयों पर बातचीत हुई। उसी दिन विषयों पर लंबी चर्चा के बाद सबने लिखना शुरू किया। शाम के सत्र में तैयार रचनाओं पर चर्चा हुई, रचनाकारों को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और नवसाक्षरों की जरूरतें रचनाकारों को बतलाई गईं। कहानियों को दूसरे दिन फिर चर्चा सत्र के तहत चुस्त बनाया गया। यह अवसर सबके लिए अनोखा था। अधिकांश रचनाकारों का भ्रम दूर हो गया था जब उन्होंने न्यास और राज्य संसाधन केंद्र की पहले से तैयार पुस्तकों का अवलोकन किया।

तीसरे दिन गाँव खोला जो कि चंपारण से पैंतीस किलोमीटर दूर है, वहाँ आदर्श शिक्षा केंद्र में नवसाक्षर महिलाओं और पुरुषों को आमंत्रित किया गया था। सभी ने पहले मेहमानों का स्वागत एक ओजस्वी गीत से किया। तदुपरांत, रचनाकारों के समूह बना दिये गए, फिर हुई असली परीक्षा। रचनाकारों के चेहरे पर संतोष और पढ़ने की ललक साफ दिख रही थी। उनके लिए जरूरी विषयों पर कहानियाँ तैयार हो गई थीं। बहुभाषाविद् राज्य संसाधन केंद्र निदेशक श्री तुहिन ने छत्तीसगढ़ी में गीत भी सुनाया। कार्यशाला के अंतिम दिन सभी रचनाकारों ने अपने-अपने अनुभव साझा किए। दोनों संस्थाओं की ओर से उन्हें श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, अध्यक्ष जिला पंचायत समिति व साक्षरता अभियान के हाथों प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किये गए। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में बीस कहानियाँ रची गईं। न्यास आगे भी इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन करता रहेगा ताकि रचनाकारों की तलाश भी हो सके और रचनाएँ भी तैयार की जा सकें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत कुछ पुस्तकें : एक परिचय

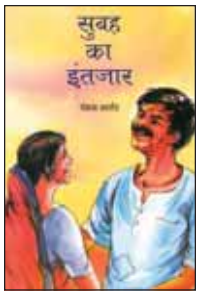

सुबह का इंतजार

पंकज भार्गव पृ. 12 ₹ 17.00

भीख माँगने के बहुविध तरीके अपनाकर भी जब रघु और लाजो चैन की जिंदगी न पा सके तो उन्हें अहसास हुआ कि मेहनत से बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं। कहानी यह है कि किसी गाँव में रघु और लाजो नाम के दंपती भीख माँगकर गुजारा करते थे। लेकिन भीख का धंधा मंदा पड़ने पर उन्होंने शहर जाने की ठानी और पहुँच गए शहर। लेकिन यहाँ कुछ अलग ही संकट आ खड़ा हुआ। वह जहाँ कहीं बैठते वहीं दूसरे भिखमंगे पहुँच जाते और उन्हें 'हमारा इलाका है' कहकर खदेड़ देते। कभी पुलिसवाले की फटकार पड़ती। आजिज आकर दोनों ने शहर के गंदे पानी को बाहर निकालने वाली पुलिया पर ठौर ली। सूअर, कुत्ते और मच्छर उनके पड़ोसी थे। थके माँदे दंपती की नींद लग गई। तभी रघु ने देखा कि कुछ लोग उनके पास आकर खड़े हैं और उन्हें नरक ले जाने की बात कर रहे हैं। रघु हड़बड़ाकर उठा। उसे समझ आ गया, यह सपना था। उसने लाजो से कहा। लाजो बोली—लोग मेहनत करते हैं और सुख से जीते हैं। हमने सिर्फ ठगी की है। रघु और लाजो ने तय किया, अब वे गाँव जाकर रहेंगे। मेहनत करके खाएँगे।

ISBN 978-81-237-6523-5

हम सब एक हैं

फारुख आफरीदी पृ. 12 ₹14.00

सांप्रदायिक सद्भाव पर आधारित मार्मिक कहानी। रतन नगर नामक छोटे-से कसबे में एक आतंकवादी वारदात हो गई। शहर के एक बस में बम विस्फोट हो गया जिसमें कॉलेज जाने वाली अनेक छात्राएँ घायल हो गईं। फरीदा घर से बाहर निकलने वाली थी, लेकिन रेडियो पर यह समाचार सुनकर सहम गई। फरीदा के दादा हमीद ने घर आकर सबको बताया कि घटना गुरुद्वारे के पास घटी है, हमने घायल व्यक्तियों को अस्पताल पहुँचाया है। अस्पताल में खून की सख्त जरूरत है। फरीदा जाने के लिए तुरंत तैयार हो गई। दादी ने कहा भी कि हमारे मजबह वालों का खून दूसरे मजहब वाले शायद ही लें, लेकिन हमीद और फरीदा इसे दरकिनार कर तुरंत अस्पताल पहुँचे जहाँ वंदना एवं अन्य सहेलियों को खून चढ़ाया गया। फरीदा का खून वंदना को चढ़ाया गया। इस बीच बम विस्फोट करने वाले आतंकवादी पकड़ में आ गए थे। वंदना ने भी होश में आने पर सब कहानी विस्तार से कही। बाद में वंदना फरीदा के घर पहुँची और आभार जताया।

ISBN 978-81-237-6550-1

गुड्डी

मुकेश पचौरी पृ. 20 ₹ 16.00

लीला के दो बेटे के बाद बेटी हुई, नाम रखा—गुड्डी। गुड्डी काफी शरारती थी, दिन-भर तरह-तरह की शरारतों में मशगूल रहती थी। लेकिन क्या हुआ कि अचानक गुड्डी एकदम से चुप रहने लगी! किशोरवय लड़की, शरारतें न करे और चुप रहने लगे तो चिंता लाजिमी थी। लीला ने पता करने की पूरी कोशिश कर ली, पर गुड्डी का मुँह न खुला। चिंतित माता-पिता उसे शहर में रहने वाले उसके बड़े पापा के पास ले गए। गुड्डी के पिता सुखराम ने अपने बड़े भाई से सारी बातें कहीं। बड़े भाई गुड्डी को मनोचिकित्सक को दिखाने ले गए, साथ में गुड्डी के माता-पिता भी थे। मनोचिकित्सक मैडम ने गुड्डी से काफी देर तक अकेले में बात की। गुड्डी बाहर निकली तो चेहरे की बेचैनी दूर हो चुकी थी। शाम को गुड्डी के माँ-बाप डॉक्टर मैडम से अकेले में मिले। मैडम ने उन्हें बताया कि गुड्डी को आपके ही किसी रिश्ते के लड़के ने छुआ है। तब से ही गुड्डी परेशान है। माँ-बाप को चाहिए कि वो बेटी की सहेली बनकर रहें और बच्ची के किशोरवय की शारीरिक-मानसिक उलझनों को सुलझाएँ। अब गुड्डी सहज हो चली थी।

ISBN 978-81-237-5194-8

किरन

राजेश शुक्ला पृ. 14 ₹ 15.00

सबलगढ़ गाँव के रामदीन और जमुना की पुत्री है किरन। पाँचवीं में पढ़ती है। रामदीन खेतिहर मजदूर है और उसने सोच रखा है कि आठवीं पास होते ही किरन को ब्याह देगा। जमुना यह चाहती नहीं है। वह उसे पढ़ाना-लिखाना चाहती है। किरन को बाग-बगीचों से बड़ा लगाव है। घर के बगीचे के पेड़-पौधों की वही देखभाल करती है। एक शाम पाठशाला से घर लौटी तो काफी उदास थी। स्कूल की मैडम ने उससे प्यार से पुचकारकर वजह पूछी तो उसने बताया कि पाठशाला से लौटते समय एक दिन उसने गाँव के लोगों को कोसुम के पेड़ को काटकर लाख निकालते देखा था जिससे उसके मन को गहरी ठेस पहुँची थी। संयोगवश, मैडम ने उसी दिन वनों के कटने के नुकसान पर पाठ पढ़ाया था। बात साफ होते ही मैडम ने पंचायत की बैठक में पेड़ न काटने के संदर्भ में अपने विचार रखे और साथ ही, जरूरतवश पेड़ काटने पर 10 नए पेड़ लगाने की बात कही। पंचायत को बात समझ में आ गई। लड़की की शादी 18 साल होने पर ही करें, यह भी समझाया गया। किरन अब खुश थी।

ISBN 978-81-237-5455-0

हरदीप और उसकी अंधविश्वासी माँ

भगवंत रसूलपुरी पृ. 20 ₹ 19.00

अनु.: सुनीता

हरदीप एक सुलझे विचारों वाला युवक है। मेहनत-मजदूरी कर उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी थी और अपनी विधवा माँ बंती के सिर पर कोई बोझ नहीं पड़ने दिया। हरदीप की माँ बेहद अंधविश्वासी थी जबकि हरदीप समझदार। वह अपने गाँव के नौजवानों का एक समूह बनाकर सब्जियाँ उगाने का काम कर कुछ पैसे उपार्जित कर लेता था। एक बार हरदीप की भाभी की तबीयत खराब हुई तो हरदीप की माँ गाँव के एक बाबा से ताबीज ले आई थी। हरदीप माँ के मन से उस ठग बाबा का प्रभाव हटाना चाहता था, पर माँ अपनी आस्था से दूर नहीं जा रही थी। हरदीप अपनी भाभी को शहर के डॉक्टर को दिखाने ले गया। डॉक्टर के इलाज से हरदीप की भाभी की तबीयत सुधरने लगी। इधर, माँ सोच रही है यह बाबा लक्खीशाह का चमत्कार है। हरदीप ने माँ के अंधविश्वास को दूर करने हेतु एक चाल चली। बाबा ने जो ताबीज दिया था उस पर बाबा के हिंदी में लिखे उलटे-सीधे अक्षरवाले कागज को फाड़कर एक दूसरे कागज पर पंजाबी में लिख दिया कि लड़का बाबा की शक्ति से नहीं होगा। हरदीप ने ताबीज को जानबूझकर खोलकर पढ़वाया, माँ सुनकर हक्का-बक्का रह गई। उसके मन से अंधविश्वास के बादल छँटने लगे थे। ISBN 978-81-237-6163-3

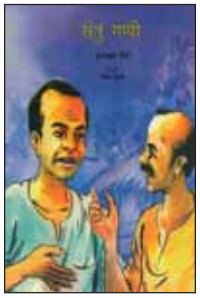

संतु गप्पी

गुरदयाल सिंह

अनु.: जतिंदर कुमार पृ. 12 ₹ 18.00

संतु गाँव-भर में अपने गप्प मारने की आदत की वजह से 'संतु गप्पी' के नाम से कुख्यात हो गया था। उसके पास जमीन चाहे सात एकड़ हो, पर वह उसे सत्तर एकड़ बताता। कपूरे उसके बचपन का मित्र था। उससे उसका शुरू से ही बैर था। कारण था कि बचपन में उसने एक बार संतु का मजाक उड़ाया था। संतु ऐसी-ऐसी बातें बनाता कि लोग उसे सच मान लेते, पर जब सच का पता चलता तो लोग बड़बड़ाते हुए अपनी राह चल देते। संतु की गप्प मारने की लत ऐसी थी कि जब उसकी शादी होने लगी तो उसने अपने ससुरालवालों और होने वाली पत्नी के बारे में ऐसी-ऐसी बातें फैलाईं कि लोग हक्का-बक्का रह गए। पत्नि का उसने काल्पनिक नाम रख छोड़ा था—सोहनी। यों, 'सोहनी' ठिगनी थी, रंग काला, नाक मोटी और आँखें छोटी। संतु गप्पी के गप्प उड़ाने की यह हद थी कि उसने अपने मरने का पहर भी सबको बता दिया और 'मर' गया। यह सब उसने कपूरे से बदला साधने की नीयत से किया था, पर वह मरा नहीं था। वर्षों जिया था वह इस घटना के बाद भी।

ISBN 978-81-237-5986-9

हम भी तुम्हारे हैं

शंकर सुल्तानपुरी पृ. 20 ₹ 12.00

मधुपुर गाँव में मंगलू नाम का एक लकड़हारा था। जंगल के सभी पक्षी उससे डरते थे, क्योंकि वह जंगल के पेड़ों को काटता था। इससे जंगल में पेड़ों की संख्या काफी कम हो गई थी। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा कि अब लकड़ी कम मिलती है, बड़ी मुसीबत हो गई है। उसकी पत्नी उस पर बरस पड़ी और बोली कि जहाँ से हो, जैसे हो कमाकर लाओ, वरना बच्चे भूखे मर जाएँगे। मंगलू कुल्हाड़ी लेकर जंगल को चल पड़ा। तीसरे पहर बाद तालाब किनारे उसे एक आम का पेड़ मिला। वह चहक उठा। तभी घनघोर वर्षा शुरू हो गई। वह फँस गया। पानी इतना अधिक बरसा कि उसकी कमर तक आ पहुँचा। जान बचानी मुश्किल हो रही थी। आमू दादा (आम के पेड़) को दया आई, उसने अपनी एक डाली नीचे झुका दी। मंगलू डाल पकड़ पेड़ पर चढ़ गया। अब उसे भूख सताने लगी। आमू दादा को दया आई। कुछ पके आम उसके पास आ गिरे। वह खाकर तृप्त हुआ। इधर, पेड़ पर बैठी कोयलें अलग-अलग तरह-तरह की बातें कर रही थीं। कोई बदला लेने की बात कह रही थी, कोई माफ कर देने और कोई सहयोग करने की। लकड़हारे के मुँह से निकला—काश, बच्चे के लिए कुछ आम मिल जाते! फिर से कुछ आम गिर पड़े। इसी प्रकार, उसे हाथी दादा अपनी पीठ पर सवार कराके घर तक पहुँचा आए। एक मैना उससे लगातार कह रही थी, "हम भी तुम्हारे हैं!" लकड़हारे का मन बदल गया था। ISBN 978-81-237-6888-5

मौसी पपीतेवाली

देवेन्द्र सत्यार्थी पृ. 18 ₹ 15.00

अमृतयान को यात्रा का बड़ा शौक था। इसी शौक ने उसे बस्तर बुला लिया—बस्तर, प्रकृति का एक अनुपम उपहार है। साथ में पत्नी देवयानी और बच्ची कविता थी। अमृतयान लेखक था, दिन-भर लिखने में व्यस्त रहता था। एक दिन एक पपीतेवाली ने आवाज दी—पपीते ले लो! कविता को देख पपीतेवाली ठिठक गई। उसने उसे गोद में लिया, पुचकारा और एक पपीता थमा दिया हाथ में। फिर चलती बनी बिना पैसे लिए। अगले दिन भी यही बात। कविता अब उसे 'मौसी' कहने लगी। पपीतेवाली ने भी देवयानी को अपने बारे में बताया—नाम, गाँव आदि। यह भी कि उसकी बच्ची व पति हैजे से चल बसे थे। बच्ची के प्रति उसके अनुराग की यही वजह थी। अब से कालिंदी कविता को गोद में ले जाती, पपीते बेचकर फिर कविता को लौटा जाती। लेकिन एक दिन जब वह नहीं आई तो देवयानी ने इसका वही अर्थ लगाया, जो एक माँ लगाती—बच्ची हाथ से निकल गई। देवयानी का रो-रोकर बुरा हाल था। लेकिन अगले दिन कालिंदी कविता को गोद में लेकर आई और सबसे सचाई बताई—वह कविता की जिद पर उसे अपना गाँव दिखाने ले गई थी, पर भारी बारिश के कारण लौट नहीं पाई थी। अमृतयान व देवयानी ने राहत की साँस ली। ISBN 978-81-237-6034-6

काम एक : तरीके तीन

(भाग-3)

वह झूम-झूमकर गीत गा रहा था।
हथौड़ा उसका भी चल रहा था।
मैं उसके पास पहुँचकर रुका।
उसका गीत सुनता रहा।
उसे पता ही न चला कि
कोई उसके पास खड़ा है।

मैं सोचने लगा—
उसे गीत गाने से रोकूँ
उससे बात करूँ?
नहीं, नहीं।

उसे देखकर मुझे उन भगतों की याद आई,
जो कीर्तन करते हैं।
कीर्तन करते हुए सुध-बुध खो देते हैं।
यह मजदूर अपने काम में इतना मगन है!
मुझे लगा, जैसे पूजा कर रहा हो।
यह पूजा किसकी करता है?
सामने तो खाली जमीन है।
न कोई मंदिर है, न कोई मस्जिद है।
न गिरजा है, न गुरुद्वारा है।

मुझे लगा, इसे जरूर मालूम होगा।
यहाँ क्या बनना है?
गीत गाते-गाते जब वह रुका,
तो मैंने पूछा—
यहाँ कोई भवन बनेगा या मकान?
मेरी बात सुनकर
उसने हथौड़ा रखा, और मुड़कर देखा।
हाथ जोड़कर सिर को नवाकर
मीठी बानी में बोला—
आप नहीं जानते? यहाँ बहुत बड़ा काम हो रहा है।

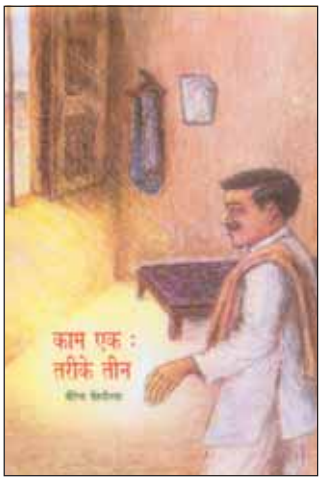

यहाँ एक स्कूल बनेगा।
बहुत बड़ा स्कूल बनेगा।
ज्ञान और विद्या का मंदिर।

पढ़ने की महिमा को अब मैं जान गया हूँ।
ये बच्चे बचपन से पढ़कर
बेहतर जीवन जी पाएँगे।
जीवन की खुशियाँ पाएँगे।

इसीलिए स्कूल मुझे मंदिर लगता है।
अपना काम पूजा जैसे लगता है।

मैं मन-ही-मन सोच रहा था
तीनों मजदूर एक ही काम कर रहे हैं।
पत्थर कूट रहे हैं।
तीनों की सोच अलग है।
तीनों के तरीके अलग हैं।
एक के लिए काम बोझ है।
वह अपनी किस्मत को रोता है।
वह दुखी है।

दूसरे के लिए
काम का मतलब केवल पैसा है।
अधिक-से-अधिक पैसा कमाना,
बस यही मकसद है।

तीसरा भी वही काम कर रहा है।
पत्थर वह भी तोड़ रहा है।
वह किस्मत को नहीं कोस रहा।
परिवार का पालन वह भी करता है।
पर वह इतना जान गया है कि
स्कूल के कारण गाँव सुधर जाएगा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित
पुस्तक 'काम एक : तरीके तीन' (वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता) से एक अंश

हमारा शरीर—एक मशीन

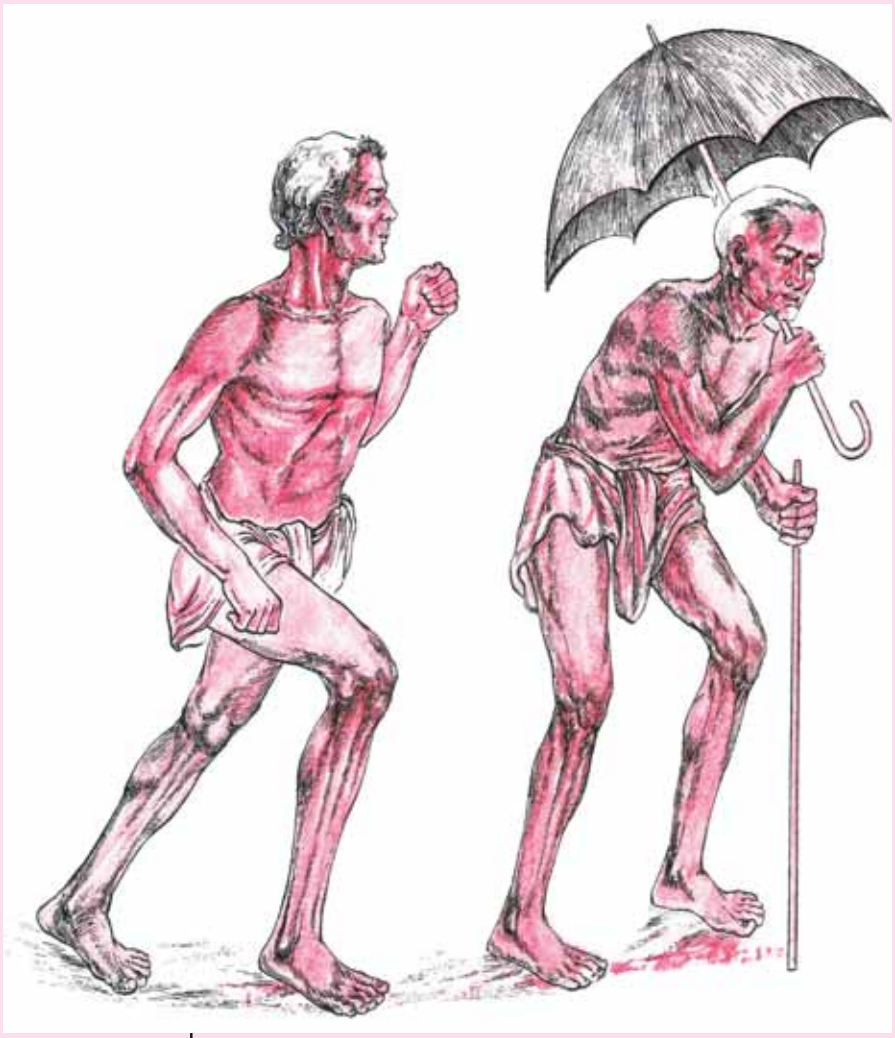

हमारा शरीर एक मशीन की तरह काम करता है। यह मशीन दूसरी मशीनों से अलग है। यह चल सकती है। यह सोच-समझ सकती है। यह अपने आप छोटी से बड़ी हो जाती है। यह अपनी रक्षा खुद कर सकती है। अपनी टूट-फूट भी खुद ही ठीक कर लेती है। बच्चा पेट में हो तभी से इस मशीन का काम शुरू हो जाता है, और बराबर चलता रहता है। है न यह एक विचित्र मशीन!

मशीन को चलने के लिए तेल या पेट्रोल की जरूरत होती है। इनके जलने से मशीन को ताकत मिलती है। और वह चलती है। तेल जलने पर फालतू तत्व धुआँ बनकर उड़ जाते हैं।

इसी तरह हमारे शरीर को भी भोजन, हवा व पानी की जरूरत होती है। इनसे शरीर को ताकत मिलती है। यह ताकत चलने-फिरने और जीवित रहने के लिए जरूरी है।

शरीर के सारे भाग अपना-अपना काम करते हैं। पेट का काम है कि हम जो खाएँ, उसे पचाए। इस पचे हुए खाने से ही हमारे शरीर का मांस तथा खून बनता है। हमें ताकत मिलती है। फेफड़ों से हम साँस लेते हैं। दिल सारी उमर चलते रहने वाला एक पंप है। यह खून को एक जगह से दूसरी जगह भेजता है। खून हमारे शरीर में माल ढोने वाली गाड़ी का काम करता है। खून द्वारा चीजें शरीर में एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जाती हैं। शरीर से फालतू चीजों को बाहर निकालने का काम गुर्दे करते हैं। हमारा दिमाग हमारे शरीर का मुखिया है। इसी के इशारों पर शरीर चलता है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'मानव शरीर' (रमेश बिजलानी) से एक अंश

जलना

हल्का जलने पर

क्या करें :

- जले हुए अंग को तुरंत ठंडे पानी में डुबा लें। मुमकिन न हो, तो उस पर बर्फ या ठंडे पानी की पट्टियाँ रखें। इससे जलन और दर्द में राहत मिलेगी।
- शरीर का थोड़ा हिस्सा जला हो और वहाँ सिर्फ हल्की- सी लाली हो, तो घर पर ही इलाज हो सकता है। उस हिस्से को साफ-सुथरा रखें। उस पर वैसलीन का हल्का-सा लेप कर दें।
- शरीर का बड़ा हिस्सा जल गया हो तो, सतही असर होने पर डॉक्टर से जरूर राय लें।

क्या न करें :

- जले हुए अंग पर घी, मरहम या ग्रीस न लगाएँ। न ही मिट्टी या कीचड़ का लेप करें।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/11/2014

जलने से छाले बन जाने पर

क्या करें :

- छालों से छेड़-छाड़ किए बगैर उन्हें साफ कपड़े से ढककर रखें।
- छाला फूट जाए तो साबुन और उबालकर ठंडे किये हुए पानी से उस हिस्से को धो दें।
- उस पर नीली दवा (जेनशियन वायलेट) लगाएँ और उसे खुला छोड़ दें। पर सफाई का पूरा ध्यान रखें। घाव को धूल, गंदगी और मक्खियों से बचाएँ। चाहे तो उसे किसी पतले कपड़े से ढक दें।

क्या न करें :

- छालों को फोड़ें नहीं, न ही उनमें सूई डालकर उन्हें पिचकाने की कोशिश करें।

डॉ. यतीश अग्रवाल द्वारा लिखित तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'तुरंत उपचार' से एक अंश

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070